'बरखा' क्रमिक पुस्तकमाला और बच्चों का पठन-निष्पादन सीखने के प्रतिफल के संदर्भ में

उषा शर्मा*

बच्चों के पढ़ना-लिखना सीखने में पठन सामग्री का अपना विशेष महत्व है। यदि पठन सामग्री रोचक और बच्चों के स्तर के अनुकूल हो तो शिक्षक उस सामग्री के इर्द-गिर्द अनेक सार्थक गतिविधियों का आयोजन करते हैं, साथ ही यदि उसमें बच्चों की सक्रिय भागीदारी रहती है तो उस पठन सामग्री से वांछनीय परिणाम प्राप्त होते हैं। 'बरखा' क्रमिक पुस्तकमाला एक ऐसी ही पठन सामग्री है जिसका निर्माण, विशेष रूप से कक्षा एक और दो के बच्चों के लिए किया गया है ताकि उन्हें रोचक और पढ़ने का आनंद देने वाली सामग्री उपलब्ध हो सके। पठन संबंधी जिन अवधारणाओं के आधार पर 'बरखा' क्रमिक पुस्तकमाला का निर्माण किया गया, अगर शिक्षक उन अवधारणाओं से भली-भाँति परिचित होकर सामग्री का बेहतरीन उपयोग करते हैं तो बच्चों को पढ़ने-लिखने के अवसर प्राप्त होते हैं। पढ़ने-लिखने के अवसर प्रदान करना भाषा विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस शोध पत्र में 'बरखा' क्रमिक पुस्तकमाला पर आधारित शोध अध्ययन के निष्कर्ष दिए गए हैं जिसमें बताया गया है कि 'बरखा' क्रमिक पुस्तकमालाएँ कक्षा 1 व 2 के बच्चों में पढ़ना सीखने तथा निजी जीवन के अनुभवों से जोड़ने में सार्थक रूप से योगदान दे रही हैं।

बच्चों के भाषा-विकास में समृद्ध परिवेश की अग्रणी भूमिका होती है। यह समृद्ध परिवेश न केवल भाषा को अर्जित करने में मदद करता है, बल्कि समाज की संस्कृति को भी आत्मसात करने में मदद करता है, इस दृष्टि से भाषा अर्जन में संस्कृति-अर्जन स्वतः ही शामिल है। यह भी कहा जा सकता है कि जब हम भाषा अर्जित करते हैं तो अनायास ही उस भाषा-समुदाय की संस्कृति को भी ग्रहण करते हैं। उदाहरण के लिए, सुहेल लखनऊ में रहता है और वह लखनऊ की भाषा को अर्जित करता है। वह जब भी हिंदी में बात करता है तो उसकी भाषा में एक चिर-परिचित सभ्यता, अदब नज़र आता है— 'आप बैठिए, पिताजी अभी आते ही होंगे।'/'बच्चों, यहाँ मत खेलिए, वरना खिड़की का काँच टूट जाएगा।'/ 'लगता है कि ताऊजी आ गए हैं।'/'आप सभी अभी बहुत छोटे हैं, इन बातों को नहीं समझेंगे।' आदि, आदि। यदि सुहेल के भाषा-प्रयोग का गहराई से विश्लेषण करें तो पाएँगे कि सुहेल की भाषा में एक विशिष्ट प्रकार का शिष्टाचार है और वह अपने से बड़ों के साथ-साथ अपने से छोटों को भी 'आप' कहकर संबोधित करता है। दूसरी ओर अंकित हरियाणा में रहता है और उसकी भाषा और संस्कृति सुहेल की भाषा और संस्कृति से अलग है। अंकित के भाषा-व्यवहार में 'तुम, तू' आदि शब्दों का बहुतायत में उपयोग होता है। न केवल इतना बल्कि उसकी भाषा में एक तरह का 'खड़ापन या

* प्रोफ़ेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली 110016

कठोरता' नज़र आती है—'आज कती ताऊ न आया सै।'/ 'बापू तू कित जा रया सै?' 'रोटी बण गई कै?' आज चाच्चा न दीख रै सै?' आदि। लेकिन अंकित के भाषा-समुदाय में सभी लोग आपसी संवाद के लिए ऐसी ही भाषा का प्रयोग करते हैं और यह भाषा-प्रयोग उस भाषा-समुदाय में स्वीकार्य है। अंकित के भाषा-प्रयोग में उसकी संस्कृति की झलक भी मिलती है—ताऊ, चाच्चा, बापू, रोटी आदि शब्द, एक ओर रिश्ते-नाते की शब्दावली के बारे में बताते हैं तो दूसरी ओर स्थान विशेष पर खाए जाने वाले व्यंजन के बारे में। भारत में अनेक जगह ऐसी भी हैं जहाँ चावल अधिक खाया जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि भाषा अपने परिवेश से जुड़ी है, उस परिवेश की संस्कृति से जुड़ी है और भाषा अर्जित/सीखने का अर्थ है—उस भाषा समुदाय की संस्कृति को अर्जित करना/सीखना।

वस्तुतः भाषा अर्जित करने के संदर्भ में समृद्ध भाषा-परिवेश की उपलब्धता ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, फिर चाहे वह अनौपचारिक हो अथवा औपचारिक! इस दृष्टि से समृद्ध भाषा सामग्री की भी महती भूमिका नज़र आती है। बच्चों के परिवेश में यह भाषा-सामग्री किसी भी रूप में उपलब्ध हो सकती है—बाल साहित्य, बाल पत्रिका, विज्ञापन, पोस्टर्स, अखबार, होर्डिंग्स, डिब्बों पर लिखा विवरण, खाने-पीने के सामान पर लिखे नाम, दुकानों के नाम, विभिन्न प्रकार के संचार माध्यम आदि। इस प्रकार स्पष्ट है कि यह भाषा-सामग्री किसी भी रूप में हो सकती है—प्रिंट यानी छपी हुई सामग्री और नॉन-प्रिंट यानी श्रव्य-दृश्य सामग्री! सभी में भाषा की विविध रंगतें और स्वरूप देखे जा सकते हैं। भाषा-सामग्री की उपलब्धता के साथ एक और सवाल जुड़ा हुआ है। वस्तुत: सामग्री का उपलब्ध होना और सामग्री का सार्थक उपयोग होना दो अलग बातें हैं। मान लीजिए कि कक्षा या घर में हर महीने बाल पत्रिका आती है और बच्चों के लिए सरलता से उपलब्ध भी है, लेकिन बच्चे कभी-कभार उसके पन्ने पलटकर देख तो लेते हैं, परंतु कभी उसके बारे में किसी के भी साथ उनकी बातचीत नहीं हुई है तो एक समृद्ध सामग्री व्यर्थ हो जाती है। जबकि घर में आए शादी के एक कार्ड के इर्द-गिर्द होने वाली बातचीत, कक्षा में की जाने वाली गतिविधियाँ, सामग्री के सार्थक उपयोग को सुनिश्चित करती हैं। शादी किसकी है? कब है? कहाँ है? किस समय क्या होने वाला है? बारात किस समय आएगी? भोजन किस समय है? हम जाएँगे कैसे? कौन-से कपड़े पहनकर जाएँगे? आदि, आदि। इन सब बिंदुओं पर बातचीत होगी तो बच्चों की मौखिक भाषा का विकास होगा। शादी से जुड़ी जानकारी के लिए कार्ड को पढ़ा भी जाएगा तो बच्चों को पढ़ने का अवसर भी मिलेगा। शादी में जाने की तैयारी करनी है तो क्यों न ज़रूरी सामान और काम की एक सूची बना लें—तो बच्चों को लिखने का अवसर भी मिलेगा! इस प्रकार सामग्री का उपयोग कौन, कैसे कर रहा है? बच्चों की सहभागिता का स्वरूप कैसा है? आदि ये सभी बिंदु महत्वपूर्ण हैं। सामग्री के संदर्भ में सबसे महत्वपूर्ण बिंदु है कि सामग्री बच्चों के स्तरानुसार और रोचक हो तथा ऐसी हो जिसमें बच्चों के भाषा विकास के लिए अनेक संभावनाएँ हों।

'बरखा' क्रमिक पुस्तकमाला

जैसा कि हम जानते हैं कि बच्चों के पढ़ना सीखने में 'पढ़ना सीखने की प्रक्रिया' के साथ-साथ, 'पठन

सामग्री के होने' और 'पठन सामग्री के सार्थक उपयोग' का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसी बिंदु को ध्यान में रखते हुए कक्षा 1 और 2 के बच्चों के लिए *'बरखा' क्रमिक पुस्तकमा*ला का निर्माण किया गया, ताकि बच्चों को पढ़ने के लिए रोचक सामग्री उपलब्ध हो सके। यह पुस्तकमाला रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित की गई है। देश भर के स्कूलों में यह पुस्तकमाला बच्चों को उपलब्ध कराई गई है। यह पुस्तकमाला हिंदी, संस्कृत, उर्दू भाषा के अतिरिक्त पंजाबी, कोंकणी और मराठी भाषा में भी उपलब्ध है। इस पुस्तकमाला में कुल चालीस कहानियाँ हैं जिनके विषय बच्चों के जीवन और अनुभव संसार से जुड़े हुए हैं। ये कहानियाँ पाँच अंतर्वस्तु के इर्द-गिर्द बुनी गई हैं जो बच्चों की रोज़मर्रा की ज़िंदगी के भीतर से ही उपजती हैं। इन कहानियों में कुल दस पात्र हैं और वे प्राथमिक स्तर के बच्चों के आयु-वर्ग के हैं। इससे प्राथमिक कक्षा में पढ़ने वाले बच्चे, उनके साथ तादात्म्य स्थापित कर सकेंगे। इन कहानियों के पात्र उस तरह के कार्य करते हैं या अपनी बात कहते हैं जो आमतौर पर बच्चे करते या कहते हैं। सभी चालीस कहानियाँ चार स्तरों में विभाजित हैं और प्रत्येक स्तर की अपनी कुछ विशेषताएँ हैं। चारों स्तरों को एक खास 'कलर कोड' दिया गया है, जैसे— पहले स्तर की किताबों को लाल रंग, दूसरे स्तर की किताबों को नीला रंग, तीसरे स्तर की किताबों को संतरी रंग और चौथे स्तर की किताबों को हरा रंग दिया गया है। पहले स्तर की कहानियों में प्रत्येक चित्र के साथ एक वाक्य दिया गया है। दूसरे स्तर की कहानियों में प्रत्येक चित्र के साथ दो वाक्य दिए गए हैं। तीसरे स्तर की कहानियों में प्रत्येक चित्र के साथ तीन वाक्य दिए गए हैं। चौथे स्तर की कहानियों में प्रत्येक चित्र के साथ चार वाक्य दिए गए हैं। प्रत्येक स्तर पर दस-दस कहानियाँ हैं और पाँचों अंतर्वस्तु को प्रत्येक स्तर की कहानियों में शामिल किया गया है। कहानियों के सभी पात्र भी प्रत्येक स्तर की कहानियों में शामिल हैं, लेकिन वे किसी अंतर्वस्तु विशेष से ही संबद्ध है। जिसे तालिका 1 में दर्शाया गया है। जैसे-जैसे स्तर बढ़ता है, वैसे-वैसे कहानियों के कथानक और भाषा की जटिलता बढ़ती है (पाण्डे, पृष्ठ संख्या 39–40, 43)।

तालिका 1— *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला की कहानियों के चारों स्तरों की विशेषताएँ

अंतर्वस्तु	पहला स्तर	दूसरा स्तर	तीसरा स्तर	चौथा स्तर	चरित्र
रिश्ते	रानी भी मुनमुन और मुन्नू	ऊन का गोला हिच हिच हिचकी	मौसी के मोज़े मेरे जैसी	पीलू की गुल्ली नानी का चश्मा	रमा और रानी
पशु-पक्षी	तोता मिठाई	मोनी चिमटी का फूल	कूदती जुराबें तालाब के मज़े	चुन्नी और मुन्नी मिमी के लिए क्या लूँ?	काजल और माधव
वाद्ययंत्र, खेल-खिलौने	गिल्ली-डंडा छुपन-छुपाई	जीत की पीपनी आउट	बबली का बाजा झूला	चलो पीपनी बनाएँ तबला	जीत और बबली
आस-पास	मज़ा आ रहा है मिली का गुब्बारा	हमारी पतंग शरबत	मिली के बाल तोसिया का सपना	मिली की साइकिल पका आम	तोसिया और मिली
खाने की चीज़ें	मीठे-मीठे गुलगुले फूली रोटी	पत्तल चावल	चाय गोलगप्पे	गेहूँ भुट्टा	जमाल और मदन

© NCERT not to be republished

हालाँकि, *'बरखा'* की कहानियाँ कक्षा एक और दो के बच्चों के लिए हैं, लेकिन इन कहानियों का इस्तेमाल, पढ़ना सीख रहे बच्चों के लिए और बच्चों द्वारा किया जा सकता है। बच्चों को यह आज़ादी है कि वे एक ही कहानी को बार-बार पढ़ सकते हैं, इस दोहराव का अपना एक विशेष महत्व है। बच्चे आपस में मिलकर भी एक कहानी पढ़ सकते हैं। इस दौरान उन बच्चों के बीच जो आपसी बातचीत होगी, भाषा-विकास की दृष्टि से उसका एक खास महत्व है।

'पढ़ना' और '*बरखा*' क्रमिक पुस्तकमाला

पढ़ना एक रचनात्मक प्रक्रिया है जिसमें पाठक अपने लिए एक अर्थ गढ़ता है। कोई एक पाठ्य सामग्री, सभी पाठकों या बच्चों के लिए समान अर्थ नहीं देती। यह पाठक है जो अपने अनुभवों और भाषाई क्षमताओं के अनुसार किसी भी पाठ्य सामग्री को अर्थ देता है। पढ़ना सीखने के लिए यह ज़रूरी है कि बच्चों को विविध प्रकार की किताबें उपलब्ध हों और उन्हें पढ़ने का अवसर भी! पढ़ना सीखने की प्रक्रिया में किसी किताब में दिए गए चित्रों पर बातचीत करना, उसे अर्थ देना, उसमें घटने वाली आगे की घटनाओं के बारे में अनुमान लगाना, भाषाई संरचना और विषय का दोहराव या पुनरावृत्ति होना आदि, महत्वपूर्ण बिंदु हैं। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* (पृष्ठ संख्या 45–46) यह स्पष्ट कहती है कि, "हालाँकि हम भाषा के विभिन्न कौशलों को एकीकृत रूप में पढ़ाने की प्रस्तावना की ज़ोर-शोर से वकालत करते हैं लेकिन कई मामलों में स्कूल को पठन और लेखन पर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है, खासकर घरेलू भाषाओं के संदर्भ में।...हम सचमुच चाहते हैं कि बच्चे समझ के साथ पढ़ें-लिखें।...भाषा कौशलों के पुंज के रूप में, चिंतन और अस्मिता के रूप में स्कूल के सभी विषयों में मौजूद है। बोलना और सुनना, पढ़ना और लिखना सभी सामान्य कौशल हैं और उनमें बच्चों की दक्षता, स्कूल में उनकी सफलता को प्रभावित करती है।" यही कारण है कि पढ़ने की कुशलता पर अपेक्षाकृत अधिक बल दिया जाता है। लेकिन हमारे स्कूलों में पढ़ने की प्रक्रिया एक नीरस और यांत्रिक प्रक्रिया बनकर रह जाती है, क्योंकि प्रायः पढ़ने में 'अक्षर ज्ञान' पर अधिक बल दिया जाता है। यह समझा जाता है कि पढ़ने का अर्थ है—लिपि चिह्नों की पहचान या अक्षर-ज्ञान, जबकि पढ़ना है— समझना! पढ़ना सीखने के संदर्भ में 'पढ़ना' की सही अवधारणा के साथ-साथ गुणवत्तापूर्ण पाठ्य सामग्री भी अनिवार्य है। इन सभी के साथ अनिवार्य है —पाठ्य सामग्री या संसाधन सामग्री का सार्थक और सुचिंतित प्रयोग! इसी बिंदु को केंद्र में रखते हुए शोध कार्य किया गया, जिसमें यह देखने का प्रयास किया गया है कि जिन राज्यों में *'बरखा'* पुस्तकमाला का सार्थक तरीके से उपयोग होता है और जिनमें *'बरखा' पुस्तकमाला* के उपयोग के प्रति कोई विशेष प्रयास नहीं किए गए—उन दोनों तरह के राज्यों में बच्चों की पठन क्षमता का स्तर कैसा है, कक्षा एक और दो के बच्चों के लिए मातृभाषा/प्रथम भाषा के सीखने के प्रतिफल (रा.शै.अ.प्र.प., 2016) के संदर्भ में बच्चों की पठन क्षमता का आकलन किया गया।

उद्देश्य

इस शोध कार्य के निम्नलिखित उद्देश्य थे—

1. कक्षा दो के बच्चों की पठन क्षमता के संदर्भ में निम्नलिखित बिंदुओं को केंद्र में रखते हुए

© NCERT not to be republished

'बरखा' क्रमिक पुस्तकमाला की सार्थकता का आकलन करना—

- पढ़ने में अनुमान लगाना;
- विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में अवधारणाओं की व्याख्या करना;
- कहानियों को अपने जीवन के अनुभवों के साथ जोड़ना और उस पर अपनी प्रतिक्रिया देना;
- पठन के माध्यम से बच्चों में संवेदनशीलता का विकास करना; और
- कहानी को आगे बढ़ाना।

2. सीखने के प्रतिफल के संदर्भ में प्रयोगात्मक समूह और अ-प्रयोगात्मक समूह के बच्चों की पठन क्षमता का आकलन करना।
3. *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला का उपयोग करने के लिए शिक्षकों द्वारा अपनाई जाने वाली कक्षा-प्रक्रियाओं की पहचान करना।
4. *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला के बारे में बच्चों के दृष्टिकोण को जानना।
5. *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला के बारे में शिक्षकों और विद्यालय-प्रमुख की राय जानना।

न्यादर्श

'बरखा' क्रमिक पुस्तकमाला, देश भर के स्कूलों में प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में, विशेष रूप से कक्षा एक और दो के बच्चों के लिए उपलब्ध कराई गई है। यह पुस्तकमाला मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, अंडमान निकोबार आदि राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों में हिंदी भाषा में, पंजाब राज्य में पंजाबी भाषा में और गोवा राज्य में मराठी और कोंकणी भाषा में उपयोग की जाती है। चूँकि गोवा राज्य में कोंकणी माध्यम के स्कूल बहुत कम थे, इसलिए मराठी और कोंकणी माध्यम के स्कूलों की संख्या में अंतर रहा। गोवा राज्य में गोवा ज़िला, जो दक्षिणी गोवा है और मध्य प्रदेश राज्य से ग्वालियर ज़िले का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया। ग्वालियर ज़िले से दो खंडों (ब्लॉक्स) अर्थात् डबरा और मुरार का चयन राज्य के प्रतिनिधियों के साथ परस्पर विचार-विमर्श के साथ किया गया। इस प्रकार 40–40 स्कूलों का चयन किया गया और उन्हें पुनः दो वर्गों में विभाजित किया गया—प्रयोगात्मक समूह (इंटरवेंशन ग्रुप) और अ-प्रयोगात्मक समूह (नॉन-इंटरवेंशन ग्रुप)।

इस शोध कार्य में अ-प्रयोगात्मक समूह, स्कूलों का वह समूह है, जिसमें *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला के सार्थक उपयोग के लिए शिक्षकों के साथ किसी भी प्रकार की चर्चा, प्रशिक्षण आदि का कार्य नहीं किया गया। वे अपनी समझ से कक्षा में *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला का उपयोग कर रहे थे। प्रयोगात्मक समूह स्कूलों का वह समूह है जिसमें *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला के सार्थक उपयोग के लिए शिक्षकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन (ओरियंटेशन प्रोग्राम) किया गया था। शिक्षकों के साथ 'पढ़ना' की अवधारणात्मक समझ, पढ़ना सीखने की प्रक्रिया, *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला की अवधारणात्मक समझ, पढ़ना सीखने में *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला का सार्थक उपयोग, बच्चों को शामिल करते हुए पढ़ना सीखने की विभिन्न गतिविधियों का आयोजन, आकलन आदि मुद्दों पर गंभीर विमर्श किया गया, अभिविन्यास कार्यक्रम के तीन महीने के उपरांत शिक्षकों के लिए

© NCERT not to be republished

एक रिफ्रेशर कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया, जिसमें प्रयोगात्मक समूह के शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत कक्षायी समस्याओं का समाधान सुझाने का प्रयास किया गया। न्यादर्श में चयनित स्कूलों के कक्षा दो में नामांकित सभी बच्चों को शामिल किया गया। पूर्व परीक्षा और पश्च परीक्षा में बच्चों की संख्या अलग-अलग रही। वे बच्चे जो पूर्व और पश्च परीक्षा में उपस्थित थे, उनकी कुल संख्या 1010 थी। शोध कार्य के लिए चयनित न्यादर्श स्कूलों की संख्या एवं बच्चों की संख्या को तालिका 2 व 3 में दर्शाया गया है।

तालिका 2— राज्यवार प्रयोगात्मक एवं अ-प्रयोगात्मक समूह के स्कूलों की संख्या

स्कूलों की संख्या					
राज्य	***मध्य प्रदेश***		***गोवा***		**कुल**
समूह/भाषा	*प्रयोगात्मक समूह*	*अ-प्रयोगात्मक समूह*	*प्रयोगात्मक समूह*	*अ-प्रयोगात्मक समूह*	
हिंदी	20	20	—	—	40
मराठी	—	—	14	14	28
कोंकणी	—	—	6	6	12
कुल	20	20	20	20	80

तालिका 3— राज्यवार प्रयोगात्मक एवं अ-प्रयोगात्मक समूह के स्कूलों में चयनित बच्चों की संख्या

बच्चों की संख्या					
राज्य	***मध्य प्रदेश***		***गोवा***		**कुल**
समूह/परीक्षा	*प्रयोगात्मक समूह*	*अ-प्रयोगात्मक समूह*	*प्रयोगात्मक समूह*	*अ-प्रयोगात्मक समूह*	
पूर्व परीक्षा	308	269	289	273	1139
पश्च परीक्षा	259	253	303	241	1056
पूर्व और पश्च परीक्षा	246	244	282	238	1010

शोध उपकरण

इस शोध अध्ययन हेतु तथ्यों का संकलन करने के लिए निम्नलिखित शोध उपकरणों का निर्माण एवं प्रशासन किया गया—

1. कक्षा अवलोकन सूची;
2. पठन निष्पादन परीक्षण (पूर्व परीक्षा और पश्च परीक्षा);
3. बच्चों के साथ समूह चर्चा;

© NCERT not to be republished

4. शिक्षकों के लिए प्रश्नावली और साक्षात्कार सूची; और
5. विद्यालय प्रमुख के लिए प्रश्नावली और साक्षात्कार सूची।

शोध प्रक्रिया

शोध अध्ययन के अंतर्गत निम्नलिखित प्रकार से तथ्यों का संकलन किया गया—

बच्चे—शोध के प्रारंभ में न्यादर्श में शामिल कक्षा दो के सभी बच्चों का पठन-निष्पादन परीक्षण (पूर्व परीक्षा) किया गया। इस परीक्षण के अंतर्गत बच्चों को एक सचित्र कहानी पढ़ने के लिए कहा गया और उस कहानी पर आधारित प्रश्न पूछे गए। कहानी पर आधारित प्रश्नों का स्वरूप इस प्रकार था—

- पूर्वानुमान लगाना (Prediction);
- कहानी को अपने जीवन से जोड़ना और मनन करना;
- विभिन्न परिप्रेक्ष्य में अवधारणा/विचार की व्याख्या करना;
- संवेदना का विकास करना;
- कहानी को आगे बढ़ाना।

कक्षा अवलोकन सूची के माध्यम से कक्षायी प्रक्रियाओं के अंतर्गत निम्नलिखित बिंदुओं का अवलोकन किया गया था—

- अपनी राय या प्रतिक्रिया व्यक्त करना;
- अपने निजी अनुभवों को साझा करना;
- सुनी गई कहानी को अपनी भाषा में कहना;
- अपनी ओर से कहानी कहना;
- चित्रों की मदद से पढ़ने की कोशिश करना; और
- ध्वनि और अक्षर में संबंध देखना।

बच्चों के साथ समूह चर्चा के माध्यम से निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर 'बरखा' क्रमिक पुस्तकमाला के बारे में जानकारी प्राप्त की गई—

- उन्हें *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला की किताबें कैसी लगीं?
- *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला की कौन-सी कहानी और कौन-सा पात्र उन्हें सबसे ज़्यादा पसंद आया और क्यों?
- *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला पढ़ते समय आपको किस तरह की कठिनाई होती है?
- कौन-सी कहानी उन्हें अच्छी नहीं लगी और क्यों?
- क्या *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला में दिए गए चित्रों से उन्हें पढ़ने में मदद मिलती है? कैसे?

शिक्षक—प्रश्नावली और साक्षात्कार-सूची शोध उपकरणों के माध्यम से *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला के बारे में शिक्षकों की राय और भाषायी प्रक्रिया संबंधी तथ्यों का संकलन किया गया। ये तथ्य चयनित स्कूलों के कक्षा दो के सभी शिक्षकों से प्राप्त किए गए। इस प्रकार कुल 80 शिक्षकों से तथ्य एकत्रित किए गए। विद्यालय प्रमुखों का साक्षात्कार भी लिया गया और यह जानकारी प्राप्त की गई कि वे *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला से कितना परिचित हैं और उसके इस्तेमाल, पढ़ना सीखने में बच्चों एवं शिक्षकों को मिलने वाली मदद आदि के बारे में क्या राय रखते हैं। क्या *'बरखा'* पुस्तकमाला को कक्षायी प्रक्रियाओं में निरंतर बनाए रखा जाना चाहिए? आदि। शिक्षक एवं विद्यालय प्रमुख से जुड़ी प्रश्नावली और साक्षात्कार में मुख्य रूप से अग्रलिखित बिंदु थे—

© NCERT not to be republished

- *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला से परिचय;
- *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला का पढ़ना सीखने और पठन योग्यता बढ़ाने में योगदान;
- *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला के प्रति बच्चों का उत्साह;
- *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला में चित्रों की भूमिका;
- *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला की विशेषताएँ और सीमाएँ; और
- *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला में सुधार हेतु सुझाव।

उपरोक्त मुख्य बिंदुओं के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया कि शिक्षक *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला से कितने परिचित हैं, उनकी अवधारणात्मक समझ कैसी है, जिन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए इस पुस्तकमाला का निर्माण किया गया है—क्या शिक्षक उनसे परिचित हैं? वे इस पुस्तकमाला का कक्षा में किस प्रकार उपयोग करते हैं? आदि।

शोध हेतु उपयोग किए गए उपकरणों के प्रश्न *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला से परिचय, कक्षा में उसके उपयोग और बच्चों एवं शिक्षकों की राय से जुड़े हुए थे। लगभग समान तरह के प्रश्न अलग-अलग उत्तरदाताओं से अलग-अलग तरह से प्राप्त किए गए ताकि विश्वसनीय तथ्य संकलित किए जा सकें।

शोध के मुख्य निष्कर्ष

शोध अध्ययन से ज्ञात निष्कर्षों को अलग-अलग श्रेणियों में उद्देश्यों के अनुसार निम्न प्रकार से विभाजित किया गया है—

1. *कक्षा अवलोकन का विश्लेषण*

कक्षा अवलोकन के संदर्भ में मध्य प्रदेश के 40 स्कूलों और गोवा के 34 स्कूलों में कक्षा के भौतिक पक्ष, पठन सामग्री और *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला की भौतिक स्थिति, सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को अवलोकित किया गया। कक्षा अवलोकन अ-प्रयोगात्मक समूह और प्रयोगात्मक समूह के सभी स्कूलों में किया गया। अवलोकन से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार हैं—

(i) *कक्षा का भौतिक पक्ष*

अ-प्रयोगात्मक समूह और प्रयोगात्मक समूह के सभी स्कूलों के संदर्भ में यह पाया गया कि अधिकांश स्कूलों (लगभग 84 प्रतिशत स्कूलों में) में बच्चों की संख्या के अनुसार उनके बैठने के लिए कक्षा-कक्ष का आकार पर्याप्त था। अधिकांश कक्षाएँ साफ़ एवं हवादार थीं और उनमें पर्याप्त प्रकाश भी था। कक्षाओं में बच्चों के बैठने की व्यवस्था दो तरह की थी—पहली, कुर्सी और मेज़ की व्यवस्था और दूसरी, ज़मीन पर चटाई की व्यवस्था। मध्य प्रदेश के प्रयोगात्मक समूह के आधे से अधिक स्कूलों (55 प्रतिशत) में कुर्सी और मेज़ की व्यवस्था थी, जबकि अ-प्रयोगात्मक समूह के 85 प्रतिशत स्कूलों में बच्चे ज़मीन पर चटाई बिछाकर बैठते थे। गोवा में इस संदर्भ में स्थिति काफ़ी बेहतर थी। गोवा के प्रयोगात्मक समूह और अ-प्रयोगात्मक समूह के क्रमशः 94.4 प्रतिशत और 87.5 प्रतिशत स्कूलों में बच्चों के बैठने के लिए कुर्सी और मेज़ की व्यवस्था थी।

(ii) *पठन सामग्री की उपलब्धता और 'बरखा' क्रमिक पुस्तकमाला की भौतिक स्थिति*

कक्षा में बच्चों के पढ़ना-लिखना सीखने में पठन सामग्री की उपलब्धता एक महत्वपूर्ण

पक्ष है। कक्षा अवलोकन के अंतर्गत यह भी देखने का प्रयास किया गया कि कक्षाओं में बच्चों के लिए पठन सामग्री उपलब्ध है अथवा नहीं और *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला की क्या स्थिति है। शोध के आँकड़े यह बताते हैं कि प्रयोगात्मक समूह के सभी स्कूलों में *'बरखा'* के साथ-साथ अन्य पठन सामग्री उपलब्ध थी, जबकि अ-प्रयोगात्मक समूह के संदर्भ में मध्य प्रदेश के 50 प्रतिशत स्कूलों में और गोवा के 93.75 प्रतिशत स्कूलों में *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला उपलब्ध थी। शोध अध्ययन के तहत दोनों राज्यों के सभी स्कूलों में *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमालाएँ काफ़ी अच्छी स्थिति में थीं। वे बच्चों के लिए आसानी से उपलब्ध थीं और बच्चों की पहुँच के भीतर थीं। पुस्तकमालाओं को खुले शेल्फ़ में रखा गया था और दीवारों पर एक रस्सी पर प्रदर्शित किया गया था जिससे बच्चे पुस्तकमालाओं को आसानी से देख सकें और अपनी पसंद की पुस्तकमाला चुन सकें।

(iii) *सीखने-सिखाने की प्रक्रिया*

शोध के लिए चयनित अधिकतर स्कूलों में बच्चे व्यक्तिगत रूप से *'बरखा'* की कहानियाँ पढ़ रहे थे। मध्य प्रदेश के प्रयोगात्मक समूह के 75 प्रतिशत स्कूलों में और अ-प्रयोगात्मक समूह के 65 प्रतिशत स्कूलों में यह स्थिति देखी गई। गोवा के दोनों समूहों में यह स्थिति 50 प्रतिशत स्कूलों में थी। शिक्षक द्वारा बच्चों को पठन सामग्री अथवा *'बरखा'* की पुस्तकमालाएँ दिए जाने के संदर्भ में यह पाया गया कि प्रयोगात्मक समूह के लगभग 65 प्रतिशत स्कूलों में और प्रयोगात्मक समूह के लगभग 15 प्रतिशत स्कूलों में यह स्थिति थी। किसी भी पठन सामग्री का सार्थक इस्तेमाल बहुत अर्थपूर्ण होता है। किसी कहानी या कविता के इर्द-गिर्द बच्चों के साथ बातचीत करना, बच्चों को उस कहानी के साथ अपने अनुभवों को जोड़ने के अवसर देना, किसी कहानी या कविता के साथ स्वयं को जोड़कर देखना, उसे आगे बढ़ाना आदि, पढ़ने-लिखने में मदद करते हैं। प्रयोगात्मक समूह के लगभग 95 प्रतिशत स्कूलों में शिक्षक द्वारा बच्चों को ये अवसर दिए गए कि वे आपस में बातचीत कर सकें, किसी कहानी के इर्द-गिर्द अपनी कहानी बना सकें, कहानी को विस्तार दे सकें, कहानी को अपने अनुभवों से जोड़ सकें आदि। प्रयोगात्मक समूह के सभी स्कूलों (100 प्रतिशत) में शिक्षक *'बरखा'* आदि पठन सामग्री पढ़ने में बच्चों की मदद कर रहे थे, जबकि अ-प्रयोगात्मक समूह के केवल 35 प्रतिशत स्कूलों में शिक्षक द्वारा बच्चों की मदद की जा रही थी। प्रयोगात्मक समूह के लगभग 90 प्रतिशत स्कूलों में शिक्षक द्वारा बच्चों को यह अवसर और स्वतंत्रता प्रदान की गई कि वे अपनी गति और क्षमता के अनुसार किताबें पढ़ सकें। अपनी गति से और अपनी पसंद की किताबों को पढ़ना, 'पढ़ना सीखने' में मदद करता है।

2. *बच्चों के साथ सामूहिक चर्चा (फ़ोकस ग्रुप डिस्कशन)*

शोध अध्ययन के लिए चयनित दोनों समूहों (प्रयोगात्मक और अ-प्रयोगात्मक) के कुल

© NCERT not to be republished

1027 बच्चों के साथ *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला के बारे में समूह चर्चा की गई। इस चर्चा में *'बरखा'* की पसंदीदा कहानी, पात्र के बारे में, पढ़ने में चित्रों की सहायक भूमिका के बारे में चर्चा की गई। समूह चर्चा में शामिल बच्चों की संख्या तालिका 4 में समूहवार प्रदर्शित की गई है— शोध अध्ययन से प्राप्त आँकड़े यह बताते हैं कि *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला की कहानियों में सर्वाधिक पसंद की गई कहानी थी—'मिठाई' (33 प्रतिशत)। इसके अतिरिक्त 'तोता', 'शरबत', 'हमारी पतंग', 'गोलगप्पे', 'मिली के बाल', 'गिल्ली डंडा', 'रानी भी' आदि कहानियाँ भी पसंद की गईं। वे कहानियाँ जो बच्चों द्वारा बहुत पसंद नहीं की गईं, उनमें थीं— 'ऊन का गोला','पत्तल', मिली की साइकिल' आदि। लेकिन आँकड़े यह भी बताते हैं कि लगभग 64 प्रतिशत बच्चों ने किसी भी कहानी को नापसंद नहीं किया। जो कहानियाँ बच्चों द्वारा नापसंद भी की गईं, उनका प्रतिशत पाँच से अधिक नहीं है। संयुक्त व्यंजनों, अक्षरों और शब्दों को बोलने में कठिनाई, अपरिचित शब्द, मात्राओं का प्रयोग आदि की वजह से 20 प्रतिशत बच्चों को *'बरखा'* की कहानियों को पढ़ने में थोड़ी असुविधा हुई। अधिकांश बच्चों को *'बरखा'* की कहानियाँ पढ़ने में कठिनाई नहीं हुई। इसमें कहानी के चित्रों और शिक्षकों की भूमिका सराहनीय रही। लगभग सभी बच्चों ने कहानी में आए पात्रों को पसंद किया और उनके द्वारा किए गए कामों की सराहना भी की। उदाहरण के लिए,'जीत' को उन्होंने इसलिए पसंद किया, क्योंकि वह सबकी मदद करता था। आँकड़े बताते हैं कि बच्चों ने *'बरखा'* की कहानियों को काफ़ी सराहा और वे उनमें आए पात्रों से भी बहुत प्रभावित हुए। उनमें से बहुत-से बच्चे, पात्रों के साथ स्वयं को जोड़ पा रहे थे और बताया कि वे भी अकसर ऐसा ही करते हैं, फिर चाहे वह खेल की बात हो या पतंग उड़ाने की या फिर पशु-पक्षियों से प्यार करने की।

3. *'बरखा' क्रमिक पुस्तकमाला के बारे में शिक्षकों की राय*

शोध अध्ययन के अंतर्गत दोनों तरह के समूहों से कुल 74 शिक्षकों का साक्षात्कार लिया गया। जिसमें *'बरखा'* के बारे में उनकी राय या प्रतिक्रिया प्राप्त की गई। हालाँकि शोध

तालिका 4 — समूह चर्चा में चयनित स्कूलों एवं बच्चों की समूहवार संख्या

राज्य	मध्य प्रदेश		गोवा		कुल
समूह	*प्रयोगात्मक समूह*	*अ-प्रयोगात्मक समूह*	*प्रयोगात्मक समूह*	*अ-प्रयोगात्मक समूह*	
स्कूल	20	20	18	16	74
बच्चे	221	262	303	241	1027
कुल बच्चे	483		544		1027

© NCERT not to be republished

अध्ययन में चयनित सभी स्कूलों में *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला उपलब्ध है जो उन्हें राज्य द्वारा मुहैया कराई गई है, जिसमें से 71 शिक्षक (95.9 प्रतिशत) इस क्रमिक पुस्तकमाला का प्रयोग कर रहे हैं। लगभग सभी शिक्षकों (प्रयोगात्मक समूह के) ने अपने साक्षात्कार में *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला के बारे में (84.4 प्रतिशत शिक्षकों ने) यह स्वीकार किया कि यह सामग्री बच्चों के 'पढ़ना' सीखने में मदद करती है और पढ़ने के प्रति रुचि उत्पन्न करती है।

इस पुस्तकमाला से बच्चों में पढ़ने का आत्मविश्वास भी विकसित हुआ है। इनमें से 44.7 प्रतिशत शिक्षकों ने यह स्वीकार किया कि *'बरखा'* पर आधारित अभिविन्यास कार्यक्रम से भाषा, भाषा शिक्षण, बाल मनोविज्ञान और पढ़ने के शिक्षाशास्त्र आधारभूत जानकारी मिली जिसने *'बरखा'* के प्रति नया दृष्टिकोण प्रदान किया जबकि अ-प्रयोगात्मक समूह के शिक्षकों (94 प्रतिशत) ने यह कहा कि ये पुस्तकमालाएँ बच्चों के 'पढ़ना' सीखने में बहुत अधिक मदद नहीं करतीं और न ही ये अनुमान लगाने तथा विभिन्न अवधारणाओं को समझने में मदद करती हैं। अ-प्रयोगात्मक समूह के केवल छह प्रतिशत शिक्षकों ने स्वीकार किया कि कुछ सीमा तक ही ये पुस्तकमालाएँ 'पढ़ना' सीखने में बच्चों की मदद करती हैं।

प्रयोगात्मक समूह के 45.9 प्रतिशत शिक्षकों ने विशेष रूप से चित्रों की सराहना की और कहा कि कहानियों में आए चित्र रोचक हैं और पढ़ने में मदद करते हैं। कहानियों की भाषा सरल है और अधिकतर शब्द, बच्चों की रोज़मर्रा की ज़िंदगी से जुड़े हुए हैं। *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला बच्चों में पढ़ने का आत्मविश्वास बढ़ाती है और 65.8 प्रतिशत शिक्षकों ने यह भी स्वीकार किया कि इनके प्रयोग से बच्चों की पढ़ने की क्षमता में भी वृद्धि हुई है। इतना ही नहीं, पाँच प्रतिशत शिक्षकों ने यह स्वीकार किया कि *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला के कक्षायी प्रयोग से कक्षा-प्रबंधन में भी मदद मिली है और यह कक्षा 3 और 4 के बच्चों के लिए भी एक बहतरीन स्रोत है। इसकी सहायता से कक्षा 3 और 4 के बच्चों को भी 'पढ़ना' सीखने में मदद मिलती है (5.5 प्रतिशत)। चूँकि *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमालाएँ कक्षा में ही उपलब्ध हैं, इस संदर्भ में 57.9 प्रतिशत शिक्षकों ने स्वीकार किया कि बच्चे अपने दोस्तों के साथ खाली समय में अपने मन से अपनी पसंद की पुस्तकमाला पढ़ने में समय का उपयोग करते हैं। 55.3 प्रतिशत शिक्षकों ने विशेष रूप से बताया कि बच्चे अब अपनी कल्पना के आधार पर अपनी कहानियाँ बनाते हैं और 52.6 प्रतिशत शिक्षकों ने बताया कि बच्चे किताब पढ़ने में अपने दोस्तों की मदद करते हैं। कहानियों के आधार पर अनुमान लगाने की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई है। बच्चे बिना किसी तनाव के पढ़ने की कोशिश करते हैं। प्रश्न पूछते हैं तथा अपनी कहानियों और अनुभवों को साझा करते हैं। *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला का कक्षा में प्रयोग करते समय 71.64 प्रतिशत शिक्षकों (प्रयोगात्मक समूह

© NCERT not to be republished

तालिका 5— राज्य एवं समूहवार स्कूलों एवं स्कूल प्रमुखों की संख्या

राज्य	मध्य प्रदेश		गोवा		कुल
समूह	***प्रयोगात्मक समूह***	***अ-प्रयोगात्मक समूह***	***प्रयोगात्मक समूह***	***अ-प्रयोगात्मक समूह***	
स्कूल	20	20	18	15	73
विद्यालय प्रमुख अध्ययन	40		33		73

के) ने यह स्वीकार किया कि उन्हें चुनौतियों का सामना नहीं करना पड़ता, लेकिन बच्चों की संख्या अधिक होने, बच्चों की मातृभाषा भिन्न होने के कारण कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अनेक बार शिक्षकों को बच्चों को कहानी उनकी मातृभाषा में बतानी पड़ती है। जिन अवधारणाओं से बच्चे परिचित नहीं हैं, उन अवधारणाओं को भी बच्चों को समझाना पड़ता है। कक्षा में बच्चों की अधिक संख्या होने के कारण सभी बच्चों से हर बार प्रतिक्रिया प्राप्त करना कठिन हो जाता है। *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला में सुधार के बारे में जो सुझाव आए, वे निम्नलिखित हैं—

- उच्च स्तर की कक्षाओं के बच्चों (कक्षा 3 से 5 तक) के लिए भी ऐसी पुस्तकमाला का निर्माण किया जाना चाहिए।
- चित्र अधिक और बड़े होने चाहिए।
- पुस्तक का आकार और अधिक बड़ा होना चाहिए।
- शिक्षकों को इनके इस्तेमाल के संबंध में नियमित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
- कहानियों में स्थानीय संस्कृति झलकनी चाहिए।

4. *'बरखा' क्रमिक पुस्तकमाला के बारे में विद्यालय प्रमुख की राय*

इस शोध अध्ययन के अंतर्गत कुल 73 विद्यालय प्रमुखों का साक्षात्कार लिया गया जिसमें उनसे *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला के कक्षा में इस्तेमाल, बच्चों के 'पढ़ना' सीखने में उसकी भूमिका और बच्चों के अनुभवों के बारे में जानने का प्रयास किया गया। जिन विद्यालयों में '*बरखा*' का प्रयोग किया जाता है, उन विद्यालयों एवं विद्यालय प्रमुखों की संख्या का विवरण तालिका 5 में दिया गया है। विद्यालय प्रमुखों से बातचीत के दौरान यह ज्ञात हुआ कि अधिकांश स्कूलों में 2016–17 से '*बरखा*' क्रमिक पुस्तकमाला उपलब्ध है और पाँच स्कूलों (ग्वालियर) में यह पुस्तकमाला 2014–15 से उपलब्ध है। गोवा के सभी विद्यालय प्रमुखों (33) ने *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला का अध्ययन किया है और वे इस पुस्तकमाला से परिचित हैं। जबकि ग्वालियर के अ-प्रयोगात्मक समूह के 18 विद्यालय प्रमुख इस पुस्तकमाला से परिचित नहीं हैं और न ही उन्होंने इसका अध्ययन किया है।

© NCERT not to be republished

जिन विद्यालय प्रमुखों ने यह पुस्तकमाला पढ़ी है, उनका विचार है कि इसकी कहानियाँ रोचक, छोटी, सुखद और पढ़ने का आनंद देने वाली हैं।

प्रयोगात्मक समूह के विद्यालय प्रमुखों में से 97.4 प्रतिशत विद्यालय प्रमुखों का मानना है कि कहानी में दिए गए चित्रण से बच्चों को पढ़ने में मदद मिलती है और 63.2 प्रतिशत विद्यालय प्रमुखों का मानना है कि ये कहानियाँ बच्चों के दैनिक जीवन से जुड़ी हुई हैं। अ-प्रयोगात्मक समूह के 80 प्रतिशत विद्यालय प्रमुख (जिन्होंने यह पुस्तकमाला पढ़ी है) ने यह स्वीकार किया कि ये कहानियाँ दिलचस्प हैं और बच्चों को आसानी से समझ आती हैं। 60 प्रतिशत विद्यालय प्रमुखों का मानना है कि इनसे पढ़ने की क्षमता में वृद्धि होती है और 40 प्रतिशत ने यह स्वीकार किया कि इनमें दिए गए चित्र पढ़ने में मदद करते हैं। प्रयोगात्मक समूह के 97.4 प्रतिशत विद्यालय प्रमुख, बच्चों के साथ इस पुस्तकमाला के बारे में बात करते हैं और उन्होंने यह बताया कि बच्चे इन कहानियों का आनंद लेते हैं। जबकि अ-प्रयोगात्मक समूह के 68.6 प्रतिशत विद्यालय प्रमुख बच्चों के साथ इस पुस्तकमाला के बारे में बात करते हैं और उन्होंने विशेष रूप से बताया कि इन कहानियों की भाषा सरल है, आसानी से समझ में आने वाली है। उन्होंने यह भी बताया कि चित्र कहानियों को समझने में मदद करते हैं (32.8 प्रतिशत विद्यालय प्रमुख), और ये कहानियाँ बच्चों के अनुभवों से जुड़ी हुई हैं (24.5 प्रतिशत विद्यालय प्रमुखों)। बच्चे न केवल नई कहानियाँ बनाते हैं, बल्कि पुस्तकमाला की कहानियाँ अन्य विषयों को पढ़ने में भी मदद करती हैं। गोवा के 24.2 प्रतिशत विद्यालय प्रमुखों का मानना है कि कुछ कहानियों में अपरिचित संदर्भ और शब्दावली हैं, इन्हें भी स्थानीय रूप दिया जाना चाहिए। 48.5 प्रतिशत विद्यालय प्रमुखों का मानना है कि बच्चों के पास इन कहानियों या पुस्तकमालाओं को पढ़ने का उपलब्ध समय पर्याप्त नहीं है।

लगभग 65.8 प्रतिशत विद्यालय प्रमुखों ने कहा कि *'बरखा'* में सुधार के लिए उनके पास कोई सुझाव नहीं है, क्योंकि किताबें काफ़ी अच्छी हैं, जबकि 25 प्रतिशत विद्यालय प्रमुखों द्वारा निम्नलिखित सुझाव दिए गए—

- विभिन्न प्रकार के और बेहतर चित्र हों।
- अधिकाधिक कहानियों एवं पुस्तकमालाओं को विकसित किए जाने की ज़रूरत है।
- पुस्तकमालाओं का आकार और अक्षरों का आकार बड़ा होना चाहिए।
- संयुक्ताक्षरों के प्रयोग से बचना चाहिए।
- इन कहानियों पर श्रव्य-दृश्य सामग्री का विकास किया जाना चाहिए।
- कक्षा 3 से 5 तक के लिए भी इस तरह की पुस्तकमाला का निर्माण किया जाना चाहिए।
- भौगोलिक संदर्भ (ग्रामीण/शहरी एवं राज्य विशिष्ट) और स्थानीय संस्कृति को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

© NCERT not to be republished

प्रयोगात्मक समूह और अ-प्रयोगात्मक समूह के मध्यमान तथा मानक विचलन में अंतर

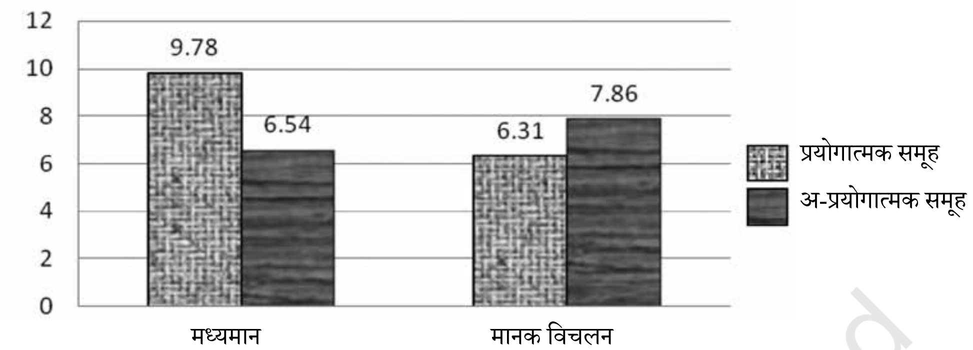

आरेख 1– प्रयोगात्मक समूह और अ-प्रयोगात्मक समूह का पठन-निष्पादन

5. *बच्चों के पठन-निष्पादन से संबंधित निष्कर्ष*

बच्चों के पढ़ना सीखने में संसाधन सामग्री की मुख्य भूमिका होती है, बशर्ते उसका सार्थक और सुचिंतित प्रयोग किया जाए। कक्षा में सामग्री का होना ही काफ़ी नहीं है, महत्वपूर्ण यह है कि शिक्षक और बच्चे उस सामग्री के साथ पढ़ने-लिखने की गतिविधियों में शामिल हों। इस संबंध में *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला के विशेष संदर्भ में यह देखने का प्रयास किया गया कि जब कक्षा में संसाधन सामग्री का सुचिंतित प्रयोग होता है तो बच्चों के पढ़ने संबंधी किन-किन पक्षों पर क्या प्रभाव पड़ता है? यह जानने के लिए कक्षा 2 के बच्चों का पठन संबंधी निष्पादन परीक्षण लिया गया, जो प्रयोगात्मक हस्तेक्षप से पूर्व और पश्चात् था। इसमें बच्चों को एक चित्रात्मक कहानी दी गई थी और उस पर आधारित प्रश्न पूछे गए थे। आँकड़ों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष पाया गया कि यदि संसाधन सामग्री के उपयोग को एक योजना और सार्थक तरीके से कक्षा में उपयोग में लाया जाए तो बच्चों के 'पढ़ना' सीखने और पढ़ने की क्षमताओं में वृद्धि होती है। प्रयोगात्मक समूह और अ-प्रयोगात्मक समूह के प्रदर्शन में यह अंतर स्पष्ट रूप से दिखाई दिया है। हालाँकि अ-प्रयोगात्मक समूह के बच्चों में भी पश्च परीक्षण में अंतर पाया गया है, लेकिन यह अंतर प्रयोगात्मक समूह के बच्चों में अधिक पाया गया। प्रयोगात्मक समूह और अ-प्रयोगात्मक समूह में पूर्व और पश्च पठन-निष्पादन के मध्य अंतर को आरेख 1 और तालिका 6 में दर्शाया गया है।

तालिका 6 से यह ज्ञात होता है कि प्रयोगात्मक समूह के पूर्व परीक्षण और पश्च परीक्षण के मध्यमान के बीच का अंतर 9.78 है, जबकि अ-प्रयोगात्मक समूह में यही अंतर 6.54 है। प्रयोगात्मक समूह और अ-प्रयोगात्मक समूह का मानक विचलन क्रमशः 6.31 और 7.86 हैं। 't'-परीक्षण का मूल्य 7.54 है जो 1008 स्वतंत्र कोटि के संदर्भ

तालिका 6 — प्रयोगात्मक और अ-प्रयोगात्मक समूह का पठन-निष्पादन

	पूर्व परीक्षण और पश्च परीक्षण के मध्यमान में अंतर	मानक विचलन	संख्या	't'-परीक्षण	स्वतंत्र कोटि (df)
प्रयोगात्मक समूह	9.78	6.31	528	7.54	1008
अ-प्रयोगात्मक समूह	6.54	7.86	482		

में सार्थक अंतर को दर्शाता है। ये आँकड़े इस ओर संकेत करते हैं कि यदि बच्चों के साथ सामग्री का सार्थक इस्तेमाल किया जाए तो बच्चे न केवल पढ़ने की विभिन्न रणनीतियाँ अपनाते हैं, बल्कि अनुमान लगाने का साहस भी प्रदर्शित करते हैं। चित्रों के सहारे अनुमान लगाते हुए पढ़ना एक ऐसी ही रणनीति है। वे पाठ्य-वस्तु को समझते हुए उनके साथ अपने अनुभवों को भी जोड़ते हैं और ऐसा तब अधिक होता है जब कक्षा में बच्चों को ऐसा करने और अपनी बात कहने के अवसर दिए जाते हैं। बच्चों के पठन-निष्पादन के निष्कर्ष यह भी प्रदर्शित करते हैं कि शिक्षकों की स्वयं की भाषा शिक्षण संबंधी समझ से इस बात पर अधिक प्रभाव पड़ता है कि किसी भी संसाधन सामग्री को कक्षा में बच्चों के साथ किस तरह से इस्तेमाल किया जाए।

जैसा कि प्रारंभ में स्पष्ट किया गया था कि पठन के विभिन्न पक्षों के बारे में बच्चों की क्षमताओं के आकलन का कार्य किया गया था। पढ़ने में अनुमान लगाना पढ़ने में मदद करता है। एक कुशल पाठक पढ़ते समय पाठ्य-वस्तु के प्रत्येक वाक्य, वाक्य के प्रत्येक शब्द और प्रत्येक शब्द के प्रत्येक हिस्से या अक्षर पर ध्यान नहीं देता। पढ़ते समय भाषा-संरचना या भाषा विन्यास की जानकारी प्रत्येक वाक्य में आगे आने वाले शब्द/शब्दों के बारे में अनुमान लगाने में मदद करती है।

तालिका 7— प्रयोगात्मक समूह के बच्चों की पठन उपलब्धि

पठन-निष्पादन का विवरण	प्रयोगात्मक समूह के बच्चों की पठन-उपलब्धि (% में)					
	पूर्व परीक्षण			*पश्च परीक्षण*		
	उत्कृष्ट	*सामान्य*	*सामान्य से कम*	*उत्कृष्ट*	*सामान्य*	*सामान्य से कम*
पढ़ने में अनुमान	38.26	25.81	35.82	80.03	17.02	2.95
विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में अवधारणाओं की व्याख्या करना	38.89	25.58	35.09	72.7	16.67	10.01
कहानियों को अपने जीवन के अनुभवों के साथ जोड़ना और उस पर अपनी प्रतिक्रिया देना	35.47	35.28	28.87	63.74	33.53	2.20
पठन के माध्यम से बच्चों में संवेदनशीलता का विकास करना	29.88	39.06	30.98	65.14	29.55	5.08
कहानी को आगे बढ़ाना	39.70	25.43	34.26	73.32	26.13	0.41

© NCERT not to be republished

साथ ही एक कुशल पाठक संदर्भ के आधार पर कही/लिखी हुई बात के अर्थ के बारे में भी अनुमान लगा लेता है। पठन में कहानियों को अपने अनुभव से जोड़ना और कहानी को आगे बढ़ाना—पठन के अन्य मुख्य पक्ष हैं। प्रयोगात्मक समूह के बच्चों के पठन-निष्पादन के संदर्भ में प्राप्त आँकड़ों को तालिका 7 (पिछले पृष्ठ पर) में प्रदर्शित किया गया है।

... दो रुपये कम पड़ गए।

- *गोलगप्पे वाले ने कहा- मेरे पैसे दे दो वरना जाने नहीं दूँगा।*
- *गोलगप्पे वाला गुस्सा हो गया और उसने जमाल और मदन के हाथ से गोलगप्पा छीन लिया।*
- *गोलगप्पे वाले ने कहा- पैसे नहीं है तो मेरे बर्तन धोने पड़ेंगे।*
- *मदन और जमाल तेज़ी से घर भाग गए और गोलगप्पे वाला पीछे-पीछे दौड़ने लगा।*

('गोलगप्पे' कहानी से)

खरगोश ने कहा – गाजर खा लो।

गधे ने मना कर दिया।

बच्चों ने चित्रों और भाषाई संरचना के आधार पर अनुमान लगाते हुए *'मिठाई'* कहानी को पढ़ने की कोशिश की। 'गधे ने मना कर दिया।' वाक्य कहानी में बार-बार आता है जिसके आधार पर बच्चों ने गधे के चित्र को देखते ही पढ़ा— *'गधे ने मना कर दिया।' 'भालू ने कहा—शहद खा लो', खरगोश ने कहा—गाजर खा लो।'* के चित्र और भाषा-संरचना के आधार पर अनुमान लगाते हुए बच्चों ने आगे की कहानी को पढ़ा—*'हाथी ने कहा—गन्ना खा लो। गिलहरी ने कहा— आम खा लो।'* बच्चों ने कहानियों में आई विभिन्न घटनाओं को अपने जीवन से जोड़ते हुए अपनी-अपनी बात प्रस्तुत की। *'झूला'* कहानी के संदर्भ में बच्चों ने ऐसे कई किस्से सुनाए जिसमें उन्हें झूला झूलते हुए चोट लगी या फिर उनके दोस्तों ने उन्हें झूले पर बैठने नहीं दिया या फिर झूले पर बैठने की जल्दबाज़ी में कई दोस्त गिर गए। *'बरखा'* की कहानियों में अनेक अवधारणाओं को बच्चों ने विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में समझने की कोशिश की और चीज़ों को नए नज़रिये से देखा। कभी तो साइकिल बिना गिरे चल लेती है,

© NCERT not to be republished

कभी वह लड़खड़ाते हुए चलती है और कभी वह फर्राटे से चलती है। *'पतंग'* और *'जीत की पीपनी'* में भी बच्चों ने पतंग को बनाने, उन्हें उड़ाने के तरीकों को समझा और साथ ही किसी पत्ते से क्या-क्या किया जा सकता है— इस सृजनात्मक सोच का भी अनुभव व्यक्त किया। *'नानी का चश्मा','मिमी के लिए क्या लूँ?' 'तोता', 'चुन्नी और मुन्नी'* जैसी कहानियाँ बच्चों में अनेक तरह की संवेदनशीलता का विकास करती हैं। नानी का चश्मा खो जाने पर उन्हें क्या-क्या दिक्कतें आएँगीं, वे कितनी परेशान हो गईं। माधव मिमी बकरी के जन्मदिन के लिए उपहार लेने के बारे में काफ़ी भाग-दौड़ करता है/काजल और माधव घायल तोते को देखकर चिंतित हो जाते हैं और उसके खाने-पीने की व्यवस्था करते हैं। इस तरह कहानियों पर उद्देश्यपूर्ण बातचीत करना बच्चों को मानव जीवन की विभिन्न संवेदनाओं का विकास करने में सहायक होती हैं। 'गिल्ली डंडा' कहानी के अंत में गिल्ली फिर से तालाब के पार चली जाती है तो बच्चे अपने-अपने अंदाज़ में कहानी को आगे बढ़ाते हैं— *'बबली ने तालाब में जाने से माना कर दिया तो सबने जीत से गिल्ली लाने के लिए कहा। जीत को पानी से डर लगता था, उसने मदन से कहा और मदन को तो पानी को देखते हीं छींकें आ गईं। सब एक-दूसरे से गिल्ली लाने के लिए कह रहे थे, इतने में बबली गिल्ली ले आई और अपने घर चल दी।'* बच्चों ने अपनी कल्पनाशक्ति का प्रयोग करते हुए विभिन्न कहानियों को अपने तरीकों से आगे बढ़ाया।

बच्चों के पठन के संदर्भ में एक और बिंदु ध्यान देने योग्य था कि वे कहानी के जिस परिवेश और पात्रों से परिचित थे, उन कहानियों के बारे में अनुमान लगाने या उन्हें आगे बढ़ाने कि प्रक्रिया में उन्होंने अपेक्षाकृत बेहतर प्रदर्शन किया। वे धीमी गति से भी समझते हुए पढ़ रहे थे। जिन शब्दों से उनका परिचय कम था, उन्हें पढ़ने में संघर्ष की स्थिति देखी गई— *'इल्ली, मज़ा, मुन्नू, घोंसला, घुंघरुओं, ज़ंजीरें, भट्टी, तोहफ़े, सौंठ'* आदि ऐसे ही शब्द हैं।

निष्कर्ष

इस शोध अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि कक्षा में केवल सामग्री का होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसके सार्थक उपयोग का भी महत्व है। एक शिक्षक कक्षा में बच्चों को जिस तरह से शामिल करता है और स्वयं भी बच्चों के साथ पढ़ने का उदाहरण प्रस्तुत करता है, वह भी एक महत्वपूर्ण कारक है। किसी भी संसाधन सामग्री के निर्माण के पार्श्व में एक शिक्षणशास्त्र कार्य करता है और उस सामग्री से लाभ उठाने के लिए उस सामग्री को संपूर्ण रूप में समझना और अपनी कक्षा की ज़रूरतों के अनुसार उसे उपयोग में लाना ज़रूरी है। निस्संदेह *'बरखा'* क्रमिक पुस्तकमाला सभी बच्चों, शिक्षकों

© NCERT not to be republished

और विद्यालय प्रमुखों द्वारा सराही गई, लेकिन उसका लाभ वही उठा सके, जिन्होंने उसे उचित ढंग से समझा और उसे सार्थक तरीके से कक्षा में इस्तेमाल किया। अतः कहा जा सकता है कि '*बरखा*' बच्चों को 'पढ़ना' सीखने और पठन क्षमता में मदद करती है। यदि बच्चों को पढ़ने-लिखने के अवसर दिए जाएँ तो भाषा संबंधी सीखने के प्रतिफलों को भी प्राप्त किया जा सकता है, जिसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण है—पठन सामग्री को पढ़कर समझना और अपने लिए अर्थ गढ़ना। पढ़ी गई सामग्री को अपने निजी जीवन और अनुभवों से जोड़ना और उसके बारे में अपनी राय बनाना। पढ़ना भी यही है—पढ़कर समझना!

संदर्भ

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

——. 2008. लता पाण्डे (संकलन एवं संपादन). *पढ़ना सिखाने की शुरुआत*. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

——. 2017. *सीखने के प्रतिफल*. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

© NCERT not to be republished